Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

(a constitueant unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar)

NAAC Accredited 'B+'

Topic : लागत एवं आगम की अवधारणाएँ : कुल सीमान्त एवं औसत [CONCEPTS OF COST AND REVENUE: TOTAL MARGINAL AND AVERAGE]

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor

Dr. Ram Prawesh

Guest Faculty (Department of Economics)

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

लागत एवं आगम की अवधारणाएँ : कुल सीमान्त एवं औसत [CONCEPTS OF COST AND REVENUE: TOTAL MARGINAL AND AVERAGE]

लागत वर्गीकरण (Classification of Cost)

A - मौद्रिक लागत (Money Cost)

B - वास्तविक लागत (Real Cost)

C - अवसर लागत (Opportunity Cost)

मौद्रिक लागत (MONEY COST)

किसी फर्म द्वारा वस्तु के उत्पादन में किये गये कुल मुद्रा व्यय को मुद्रा लागत कहते हैं। दूसरे शब्दों में, उत्पत्ति के समस्त साधनों के मूल्य को यदि मुद्रा में व्यक्त कर दिया जाये तो उत्पादक इन उत्पत्ति के साधन की सेवाओं को प्राप्त करने में जितना कुल व्यय करता है, मौद्रिक लागत कहलाती है।

मौद्रिक लागत के अन्तर्गत तीन प्रकार की लागतों को सम्मिलित किया जाता है-

(1) कच्चे माल पर व्यय (2) श्रम की मजदूरी एवं वेतन (3) अविभाज्य बड़े उपकरण एवं मशीन पर व्यय (4) पूँजी पर दिया जाने वाला ब्याज (5) भूमि का किराया अर्थात् लगान (6) मशीनों की टूट-फूट एवं घिसावट (Depreciation) (7) प्रबन्ध व्यय (8) विज्ञापन व्यय (9) यातायात व्यय (10) बीमा कम्पनियों को दी जाने वाली धनराशि (11) सामान्य लाभ (12) ईंधन व्यय

मौद्रिक लागत के अन्तर्गत तीन प्रकार की लागतों को सम्मिलित किया जाता है-

(i) स्पष्ट लागतें (Explicit Costs) -वे लागतें हैं जो उत्पादन के द्वारा उत्पत्ति के अनेक साधनों को एकत्रित करने पर स्पष्ट रूप से व्यय की जाती हैं। इस प्रकार स्पष्ट लागतें उत्पादन का प्रत्यक्ष व्यय स्पष्ट करती हैं। स्पष्ट लागतों के अन्तर्गत निम्नलिखित मदों में किया जाने वाला व्यय सम्मिलित है-

(a) कच्चे माल पर व्यय (b) श्रमिक की मजदूरी (c) उधार ली गयी पूँजी पर ब्याज (d) भूमि और बिल्डिंग का किराया (e) उपकरणों की टूट-फूट (f) विज्ञापन व्यय (g) बीमा व्यय (h) कर, आदि के भुगतान में व्यय।

(ii) सन्निहित लागतें (Implicit Costs) - इन लागतों में उत्पादन के वे व्यय सम्मिलित होते हैं जिनका उत्पादक को प्रत्यक्ष रूप से भुगतान नहीं करना होता। इसमें उन सेवाओं एवं साधनों की कीमतों को सम्मिलित किया जाता है जिनका उत्पादक प्रयोग तो करता है किन्तु प्रत्यक्ष रूप में उसकी कीमत नहीं चुकाता। ऐसे साधनों एवं सेवाओं की लागतों को सन्निहित लागतों के रूप में जाना जाता है। सन्निहित लागतों के अन्तर्गत निम्नलिखित मद सम्मिलित किये जाते हैं-

(a) स्वयं उत्पादक द्वारा प्रदान की गयी सेवा की मजदूरी

(b) उत्पादन की अपनी स्वयं की पूँजी का ब्याज

(c) उस बिल्डिंग का किराया जो स्वयं उस उत्पादक की है किन्तु उत्पादन में प्रयोग की जा रही है।

(d) प्रबन्ध एवं संगठन पर प्रदान की जाने वाली सेवाओं के ऊपर प्राप्त होने वाला सामान्य लाभ।

सन्निहित मौद्रिक लागत प्राप्त करने के लिए उपर्युक्त मदों की चालू बाजार मूल्य (Current Market Price) पर गणना की जानी चाहिए। इन्हें सन्निहित मौद्रिक लागत इसलिए कहा जाता है क्योंकि उत्पादक द्वारा स्वयं प्रस्तुत की जा रही सेवाओं के भुगतानस्वरूप स्वयं उत्पादक को प्राप्त हो रही है। वस्तुतः यह उत्पादन का वह व्यय है जो रिकॉर्ड के रूप में उपलब्ध नहीं हो पाता किन्तु आर्थिक दृष्टिकोण से सन्निहित लागतों की अपेक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि ये लागतें भी कुल मौद्रिक लागतों का एक अंग हैं।

(iii) सामान्य लाभ (Normal Profit) - उत्पादक को उत्पादन में बनाये रखने के लिए जिस न्यूनतम लाभ की आवश्यकता होती है वह न्यूनतम लाभ सामान्य लाभ कहलाता है। यह न्यूनतम लाभ राशि यदि उत्पादक को प्राप्त नहीं होती तब वह उत्पादन कार्य बन्द कर देगा और स्वयं भी एक वेतनभोगी बनने का प्रयास करेगा। अतः न्यूनतम लाभ राशि को उत्पादन की मौद्रिक लागत में जोड़ा जाना चाहिए।

संक्षेप में,
कुल मौद्रिक लागत = कुल स्पष्ट लागत + सन्निहित लागत सामान्य लाभ

Total Production = Total Explicit Cost+ Implicit Cost + Normal Cost

वास्तविक लागत (REAL COST)

मार्शल के अनुसार एक वस्तु के उत्पादन में समाज के विभिन्न वर्गों द्वारा किया गया प्रयत्न एवं त्याग (Efforts and Sacrifices) उत्पादन की वास्तविक लागत है। इस प्रकार किसी उत्पादन क्रिया के अन्तर्गत होने वाले कष्ट एवं त्याग वास्तविक लागत उत्पन्न करते हैं। वास्तविक लागतों को सामाजिक लागत भी कहा जा सकता है क्योंकि समाज को वस्तुओं के उत्पादन में कष्ट का सामना करना पड़ता है।

मार्शल के शब्दों में, "किसी वस्तु के उत्पादन में विभिन्न प्रकार के श्रमिकों को जो प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष प्रयत्न करने पड़ते हैं अथवा साथ ही वस्तु के उत्पादन में प्रयोग की जाने वाली पूँजी को संचित करने में जो संयम अथवा प्रतीक्षा करनी पड़ती है, में सब प्रयत्न अथवा त्याग मिलकर वस्तु की वास्तविक लागत कहलाते हैं।"

अवसर लागत (OPPORTUNITY COST)

ऑस्ट्रियन अर्थशास्त्रियों ने 'वास्तविक लागत' (Real Cost) के विचार में संशोधन किया क्योंकि उनका विचार था कि वास्तविक लागत के तथ्य में कष्ट, त्याग आदि मनोवैज्ञानिक तत्व भी शामिल हैं जिन्हें मुद्रा के मापदण्ड द्वारा नहीं मापा जा सकता। इसी कारण इन्होंने वास्तविक लागत के स्थान पर अवसर लागत का प्रयोग किया। अर्थशास्त्र का मौलिक सिद्धान्त यह है कि आर्थिक साधन आवश्यकताओं की तुलना में सीमित होते हैं। अतः किसी वस्तु के उत्पादन का अर्थ है- दूसरी वस्तु या वस्तुओं के उत्पादन से वंचित होना। बेन्हम के शब्दों में, "किसी वस्तु की अवसर लागत वह सर्वश्रेष्ठ विकल्प है जिसका उत्पादन उन्हीं उत्पत्ति साधनों द्वारा उसी लागत पर उस वस्तु के विकल्प के रूप में किया जा सकता है।"।

आगम की अवधारणा (CONCEPT OF REVENUE)

आगम का अभिप्राय उस विक्रय राशि (Sales Proceeds) से है जिसे फर्म अपना उत्पादन बेचकर प्राप्त करती है। प्रत्येक फर्म का उद्देश्य अधिकतम लाभ कमाना होता है। लाभ, उत्पादन लागत तथा प्राप्त आगम पर निर्भर करता है।

हम जानते हैं कि

लाभ = आय - लागत

फर्म का कुल लाभ दी हुई लागत दशाओं में कुल आगम (Total Revenue) पर निर्भर करता है।

आगम की विभिन्न धारणाएँ (Different Concepts of Revenue)

(1) कुल आगम (Total Revenue or TR) - किसी फर्म का कुल आगम वस्तु की एक इकाई कीमत तथा कुल विक्रय की गयी इकाइयों के गुणनफल द्वारा प्राप्त किया जाता है।

दूसरे शब्दों में, **कुल आगम = कुल बिक्री से प्राप्त राशि**

= बिक्री इकाइयाँ प्रति इकाई मूल्य

उदाहरण के लिए, एक विक्रेता वस्तु की एक इकाई 10 में बेचता है और यदि वह कुल 500 इकाइयाँ बेचता है तब इस दशा में

कुल आगम = 10 × 500 = 5,000

(2) औसत आगम (Average Revenue or AR) - कुल आगम को बिक्री की गई इकाइयों की संख्या से भाग देने पर औसत आगम (AR) प्राप्त होता है।

$$AR = \frac{\text{कुल आगम}}{\text{कुल बिक्री की गयी इकाइयाँ}}$$

$$AR = \frac{TR}{\text{Output}}$$

अर्थात् AR सदैव वस्तु की प्रति इकाई कीमत को प्रदर्शित करता है (AR always depicts Price of a Commodity per Unit)।